

कूटनीति और मज़बूत प्रतिलोक उपाय

यह एडिटरियल 10/08/2021 को 'हदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "To take on China, rely on diplomacy and strong counter-measures" लेख पर आधारित है। इसमें LAC पर जारी संकटों के समाधान के लिए कूटनीतिक आवश्यकता के साथ-साथ मज़बूत प्रतिलोक उपायों के संबंध में चर्चा की गई है।

भारत और चीन द्वारा पूर्वी लद्दाख में गोगरा विवादित स्थल से अपने-अपने सैन्य बलों को पीछे हटाने के लिए बनी सहमत अप्रैल 2020 (गलवान में झड़प) से पूर्व की यथास्थिति की बहाली की दिशा में बढ़ाया गया नवीन कदम है। ज्ञात हो कि चीनी सेना द्वारा वास्तविक नियंत्रण रेखा (Line of Actual Control-LAC) पर विभिन्न क्षेत्रों में पूर्व-नियोजित घुसपैठों से दोनों देशों के बीच तनाव और संघर्ष की स्थिति बनी हुई है।

वर्तमान में गोगरा, गलवान और पैगांग त्सो सहित तीन संघर्ष क्षेत्रों से दोनों पक्षों ने अपनी सेनाएँ पीछे हटा ली हैं, जबकि कई अन्य सामरिक स्थलों पर गतिरोध बना हुआ है और इनके त्वरित समाधान की आवश्यकता है। इन तीन क्षेत्रों में हुई प्रगति से सबक लेते हुए चीन और भारत को अन्य क्षेत्रों में भी गतिरोध समाप्त की दिशा में आगे बढ़ने की ज़रूरत है।



समझौता वार्ता: सीखे गए सबक

- **सतत कूटनीतिक सकारात्मक परिणाम देती है:** कई दौर की वार्ताओं के कारण दोनों दृष्टिगत एशियाई शक्तियों ने एक तीखे संघर्ष को टाल दिया है, गलवान में हुई हसिक झड़प के बाद जिसकी प्रबल संभावना बनी हुई थी।
 - LAC पर दोनों सेनाओं की बातचीत ने प्रत्यक्ष रूप से एक-दूसरे को उनकी अपेक्षाओं और आकांक्षाओं से अलग कराने में मदद की।
 - इसके अलावा, चीन के मुकाबले भारत के पक्ष में अमेरिका की संलग्नता ने भी तनाव को कम करने में सहायता की।
- **कूटनीतिक वार्ता आवश्यक, लेकिन पर्याप्त नहीं:** सैन्य प्रतिरोध और संकल्प के प्रदर्शन के बिना आक्रामक और वसितारवादी चीन को अपने बंदरों और अर्द्ध-स्थायी संरचनाओं को नष्ट करने अथवा अपने टैंकों और बख्तरबंद वाहनों को अप्रैल 2020 से पूर्व की स्थिति में वापस ले जाने के लिए मनाया जाना संभव नहीं था।
 - चीन ने तीन अतिक्रमण क्षेत्रों से अपनी सेना वापस करने का नरिणय तब लिया जब उसने पाया कि भारत बराबरी से मुकाबले के लिए तैयार है, कुछ क्षेत्रों में चीनी सैन्य बलों की संख्या से बराबर या उससे अधिक सैन्य बलों की तैनाती कर रहा है, और उस क्षेत्र में प्रतिरोधी

आक्रामकता की वृद्धि कर रहा है जिससे चीन अपने हस्तिसे का LAC बताता है।

- **आक्रामक रक्षा:** इस पूरे संकटकाल के दौरान LAC पर भारत का रणनीतिक अवसंरचना-निर्माण और बल परिक्षेपण "आक्रामक रक्षा" (offensive defence) की अवधारणा से नरिदेशति रहा, जसिने चीन को अपनी वसितारवादी इच्छाओं की लाभ-हानि की पुनर्रगणना करने के लिए वविश कथि।
- **शक्ति के माध्यम से शांति:** चूँकि संकट का कूटनीतिक समाधान सैन्य अभियानों पर नरिभर है और रणनीतिक दृढ़ संकल्प को प्रकट करता है, भारत को शक्ति के माध्यम से शांति (peace through strength) पाने के इस मार्ग पर बने रहना चाहिए।
 - इस रणनीति में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बहुपक्षीय प्रतसंतुलनकारी दबाव बनाने के लिए क्वाड (Quad) को सक्रयि और कार्यान्वति करना; चीनी वस्तुओं, प्रौद्योगिकि और नविश पर अधिकाधिक नयित्रण; और तबिबत एवं ताइवान की स्थिति जैसे संवेदनशील मुद्दों पर पुनः सक्रयि होने जैसे सभी उपाय शामिल हो सकते हैं।

चुनौतियाँ

- **एक-दूसरे की मंशाओं पर संदेह:** चूँकि भारत और चीन एक-दूसरे की मंशाओं, लक्ष्यों और अंतर्राष्ट्रीय संरेखताओं को लेकर लंबे समय से संदेह का रुख रखते हैं, इसने सीमा संकट को गहरा करने में योगदान कथि है।
 - LAC पर दोनों ओर लगभग 50,000 सैनिकों की तैनाती की स्थिति में पुनः हसिक झड़पों की संभावना से इनकार नहीं कथि जा सकता है।
- **शक्ति के लिए प्रतसिपर्द्धा:** नशिचय ही, दोनों पड़ोसी देश एशिया में और उसके बाहर अपनी शक्ति और प्रभाव के लिए प्रतसिपर्द्धा करना बंद नहीं करेंगे, लेकिन वे सीमा वविवाद को एक वास्तविक युद्ध में परणित होने देने पर नयित्रण अवश्य रख सकते हैं।
- **भारत-अमेरिका संबंधों का गहरा होना:** भारत-चीन संबंधों में आगे और कठनाई आ सकती है, वशिष रूप से जबकि भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी परपिक्व हो रही है और अमेरिका-चीन संबंधों में भारी गरिावट आ रही है।
- **सैन्य अग्रसक्रयिता से संबद्ध चुनौतियाँ:** यद्यपि भारतीय सैन्य अग्रसक्रयिता (military proactiveness) इस संकट से नपिटने के लिए अनविार्य विकल्प है, लेकिन इस प्रकार का संतुलन असथरि प्रवृत्तति रखता है और तनाव में अनुचति वृद्धि का जोखिम उत्पन्न करता है।

आगे का रास्ता

- **आपसी संवाद के माहौल को बनाए रखना:** दोनों पक्षों के लिए यह अत्यंत आवश्यक होगा कि वे कड़ी मेहनत से प्राप्त वशिंरान्ति की स्थिति पर संतोष करें और इस दशि में हुई प्रगतिके समेकन के लिए मलिकर कार्य करें। इसके साथ ही, आपसी संवाद के माहौल को बनाए रखते हुए तनाव में और कमी लाने की आवश्यकता है, जबकि सीमा प्रबंधन और नयित्रण तंत्र में सुधार कथि जाना चाहिए।
- **दोनों देशों को इन चार आधारभूत वषियों में महारत हासलि करने की आवश्यकता है:**
 - **नेतृत्व:** इसका अभपिराय है दोनों देशों के कुशल नेतृत्व के मार्गदर्शन में आपसी सहमततिक पहुँचना और द्वपिक्षीय संबंधों के वकिस की दशि को नरिदेशति करना।
 - **संचरण:** इसका अभपिराय है नेतृत्व की आपसी सहमतिको सभी स्तरों तक संचरति करना और इसे मूरत सहयोग एवं परणामों के रूप में साकार करना।
 - **आकार देना:** इसका अर्थ है मतभेदों को दूर करने से आगे बढ़ते हुए द्वपिक्षीय संबंधों को सक्रयि रूप से आकार देना और सकारात्मक माहौल को सुदृढ़ करना।
 - **एकीकरण:** इसका अर्थ है आदान-प्रदान और आपसी सहयोग को मज़बूत करना, हतियों के अभसिरण को बढ़ावा देना और साझा वकिस की सथतिप्राप्त करना।
- **परस्पर वकिस:** दो बड़ी उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के रूप में चीन और भारत को साथ-साथ वकिस करने, एक-दूसरे के लिए अवरोध उत्पन्न करने के बजाय साझेदारी में आगे बढ़ने और साझा प्रगतिके लिए मलिकर कार्य करने की आवश्यकता है।

नषिकर्ष

भारत के पास इसके वरिद्ध प्रेरति चीनी नीतिके समक्ष संकोच करने या कमज़ोर पड़ने का विकल्प नहीं है। इस लंबे समय से जारी संकट में वीरता और वविक के मेल से ही भारत सफलता प्राप्त कर सकता है।

अभ्यास प्रश्न: सैन्य प्रतरीध और संकल्प के प्रदर्शन के बिना आक्रामक और वसितारवादी चीन को वास्तविक नयित्रण रेखा पर अपने बंकरों और अर्द्ध-स्थायी संरचनाओं को नषट करने के लिए बाध्य नहीं कथि जा सकता। चर्चा कीजिये।